शोध-सार

समाज के सदस्य के रूप में मानव के अभूतपूर्व सृजनशील कार्यों में अनुवाद भी है। अनुवाद के माध्यम से व्यक्ति एक स्थान पर रहते हुए अपरिचित भाषा-भाषी व्यक्तियों, उनकी संस्कृतियों और विश्व के विभिन्न भागों में अस्तित्वमान ज्ञान व घटनाओं से अपनी भाषा में परिचित होता है और अपनी जिज्ञासा को शांत करता है। इस रूप में ज्ञान को सभी अध्येताओं के लिए सुलभ बनाना अनुवाद की मूल प्रकृति है। अनुवाद ज्ञान को संचरित करने तथा विभिन्न समुदायों, संस्कृतियों और देशों के बीच सेतु का कार्य करता है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ अनुवाद की उपयोगिता और भूमिका बढ़ती रही है। वर्तमान में विश्व का काम अनुवाद के बिना चलना संभव नहीं रह गया है। वैज्ञानिक उपलब्धियों, सांस्कृतिक व साहित्यिक आवश्यकताओं, आर्थिक व राजनैतिक स्थितियों से लेकर बाज़ार के विस्तार तक अनुवाद ने अपना महत्व सिद्ध किया है।

विद्वान मोटे तौर पर अनुवाद को दो रूपों, साहित्येतर और साहित्यिक अनुवाद; के रूप में वर्गीकृत करते हैं। जहाँ साहित्येतर अनुवाद में अनुवादक से विशेष रचनात्मक-कौशल की अधिक अपेक्षा नहीं होती, वहीं साहित्यिक अनुवाद के अधिक रचनात्मक होने के कारण अनुवादक से विशेष योग्यता की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक को चयनात्मक होना पड़ता है और इसमें अनुवाद के उद्देश्य तथा लक्षित पाठक महत्वपूर्ण होते हैं और उन्हीं के अनुसार

अनुवादक परिवेश, पृष्ठभूमि, घटना, समाज-सांस्कृतिक तत्वों व पात्रों में बदलाव करता तथा उन्हें गढ़ता है। अगर मूल कृति का परिवेश और अनुवादक के लक्षित पाठक का परिवेश एक ही है, तो अनुवाद करना थोड़ा सहज हो जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के लिए चयनित कृति की पृष्ठभूमि, परिवेश व वातावरण भारत ही है और अनुवादक के लक्षित पाठक की पृष्ठभूमि भी भारत ही है, इसलिए अनुवादक को परिवेश गढ़ने में विशेष कठिनाई का समाना नहीं करना पड़ा। इसमें भाषा के स्तर पर तथा समाज-सांस्कृतिक स्तर पर समस्याएँ हुई।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को तीन अध्यायों में विभाजित कर अध्ययन को पूरा किया गया है। इसके पहले अध्याय में विषय की स्थापना, प्रविधि, चयनित उपन्यास का कथ्य, लेखक परिचय, शोध सीमा और संभावनाएँ हैं। दूसरे अध्याय के रूप में चयनित उपन्यास 'The Cost of Love : A Common Man's Love Story' का हिंदी अनुवाद है, जिसे शोधार्थी ने स्वयं किया है। यह अनुवाद "आम आदमी का प्रेमाख्यान" शीर्षक से किया गया है। चयनित कृति का हिंदी अनुवाद करना शोधार्थी के शोध उद्देश्यों में शामिल है। चयनित उपन्यास की विषय-वस्तु प्रेम, उसे शक्ति प्रदान करने वाले, किंतु अनेक बार उसी के सामने चुनौतियाँ बनकर खड़े होने वाले समाज-सांस्कृतिक कारणों का विश्लेषण है। नायक हमारे ही समाज में रहने वाला एक आम आदमी है। इसमें स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि जब नैसर्गिक प्रेम को सामाजिक विसंगतियां नुकसान पहुँचाती हैं, तो उसका परिणाम क्या होता है। यह भी कृति की मूल विषय-वस्तु में शामिल है। प्रेम एक सार्वभौमिक विषय-वस्तु है और इसकी प्रासंगिकता कालातीत है। इसे किसी राष्ट्र-राज्य की निश्चित राजनैतिक सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। उपन्यास के लेखक सौरभ सिंह ने एक सामान्य व्यक्ति की प्रेम कहानी के बहाने स्त्री-पुरुष संबंधों के रहस्य, स्त्री की सुरक्षा, उसकी स्वाधीनता, आधुनिक समय में भी पुरुष के चरित्र में छिपी हिंसा तथा समाज की प्रश्नांकित भूमिका को उजाले में लाने का भी प्रयास किया है।

चयनित उपन्यास के प्रकशित होने के बाद विभिन्न लेखकों, आलोचकों व पाठकों के द्वारा इस पर काफी सकारात्मक प्रतिक्रियाएं दी गई तथा इसकी विषयवस्तु को काफी सराहा गया। वास्तव में, वर्तमान समय में निर्भया प्रकरण मानव सभ्यता व व्यवहार के आलोचनात्मक पक्ष का विचारणीय उदाहरण है। यह काफी गंभीर चर्चा का विषय रहा है। इस दृष्टि से इसकी विषय वस्तु बहुत ही प्रासंगिक है। उपन्यास की भाषा पर विचार करें तो यह सरल, प्रवाहयुक्त और प्रभावी है। सभी चरित्र कहानी के अनुसार गढ़े गए हैं और जीवंत हैं, जो कहानी के अंत तक पाठक को बांधे रखते हैं ।

लघु शोध प्रबंध के तीसरे अध्याय में चयनित उपन्यास का अनुवाद करते समय अनुभव की गई अनुवाद संबंधी व्यावहारिक समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय का आधार शोध प्रबंध का दूसरा अध्याय है। इस अध्याय में अनुवाद संबंधी सैद्धांतिक समस्याओं से हटकर केवल उन्हीं भाषिक और समाज-सांस्कृतिक समस्याओं का विश्लेषण किया गया है, जिनको अनुवादक ने अनुवाद कार्य करते समय अनुभव किया। शोध कार्य की यही व्यावहारिक विशेषताएँ इसे अनूठा बनाती हैं। शोधार्थी ने समस्याओं को विश्लेषित करने के पूर्व उन्हें वर्गीकृत और स्तरीकृत कर स्थापित करने का भरसक प्रयास किया है। इस अध्याय में स्पष्ट किया गया है कि यह अनुवाद कार्य संप्रेषण के सिद्धांत को ध्यान में रख कर किया गया है। भाव को संरक्षित करने के लिए आवश्यकतानुसार शब्दों के अर्थ के इतर अन्य शब्दों का भी चयन किया गया है। संवादों के प्रसंग, वातावरण, स्थान, धार्मिक मान्यताएँ और समाज-सांस्कृतिक तत्वों आदि को ध्यान में रखते हुए अनूद्य पाठ के प्रभाव को अनूदित कृति में लाने का भरसक प्रयास किया गया है। अनूद्य पाठ के भाव और प्रभाव का संरक्षण करते हुए अनुवाद कार्य पूरा किया गया है। अनुवाद में हुई व्यावहारिक समस्याओं के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अनुवाद में शब्द, वाक्यांश, वाक्य, पैराग्राफ, मुहावरों, कहावतों और समाज-सांस्कृतिक तत्वों के स्तर पर समस्याएँ आई हैं।

प्रस्तुत शोध-कार्य व्याहारिक अनुवाद के क्षेत्र में कुछ स्थापनाओं की ओर भी संकेत करता है। इनमें सबसे पहली स्थापना कृति की विषय-वस्तु, उसकी कालगत प्रासंगिकता और कथ्य की सार्वभौमिकता पर बल देने से संबंधित है। किसी भी कृति का अनुवाद करने के पूर्व इन्हें समझना और इन पर चिंतन करना आवश्यक होता है। अन्यथा अनुवादक अपने अनुवाद कर्म के साथ न्याय नहीं कर पाता। इस दृष्टि से अनुवाद करते समय अनुवादक को भरसक प्रयास करना चाहिए कि अनूदित कृति में मूल कृति का भाव संरक्षित हो और वह मूल की ही भांति प्रभावी हो। इसके लिए भाव और उसमें छिपे संदेश को नुकसान पहुंचाए बिना, अनुवादक पृष्ठभूमि, परिवेश, पात्रों, समाज-सांस्कृतिक तत्वों आदि में आवश्यक जोड़-तोड़ कर सकता है।

दूसरी स्थापना गहन अध्ययन है। अनुवाद कार्य को शुरू करने से पूर्व मूल कृति का गहन अध्ययन किया जाना अनिवार्य है। ऐसा रसानंद के लिए नहीं, बल्कि पात्रों के मनोभाव, उनके आचार-विचार, उनके सामाजिक स्तर, परिवेश और मान्यताओं आदि को बेहतर ढंग से समझने, इससे भी आगे सामाजिक दशाओं, प्रसंग, संदेश और उसकी प्रासंगिकता को समझने के लिए आवश्यक है। इन पर सामान्य समझ बना लेने के बाद अनुवादक अपने पाठक को ध्यान में रखते हुए अनूदित कृति में नए पात्रों को गढ़ने या उनमें परिष्कार करने के बारे में विचार कर सकता है, ताकि उसके पाठक उसे सहज और स्वाभाविक रूप से स्वीकार कर सकें।

इस दृष्टि से पाठक केंद्रित अनुवाद तीसरी स्थापना है। अनुवादक का उत्तरदायित्व है कि वह मूल पाठ के अर्थ, भाव और संदेश के प्रति वफादार बना रहते हुए पाठक केंद्रित अनुवाद करे, क्योंकि अनुवाद की सफलता और असफलता पाठक की स्वीकारोक्ति पर निर्भर है। इस क्रम में अगली स्थापना कथानक का प्रभाव और परिवेश है। अनुवादक को अर्थ, भाव और संदेश के प्रति वफादार रहते हुए प्रभाव की रक्षा करनी पड़ती है और लक्षित पाठक के अनुसार परिवेश को गढ़ना पड़ता है।

शोध-कार्य के समग्र रूप के आधार पर उसकी उपलब्धियों और संभावनाओं को निम्नानुसार लक्षित किया जा सकता है:

उपलब्धियाँ

- प्रस्तुत लघु शोध कार्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य की एक उपन्यास-कृति हिंदी भाषी पाठकों के लिए उपलब्ध होना है।
- इस कृति के हिंदी अनुवाद से अनुवाद अनुशासन की संवाद-सेतु की भूमिका का विस्तार हुआ है।
- यह लघु शोध कार्य इस दृष्टि का खंडन करता है कि अनुवाद अध्ययन में केवल सैद्धांतिक समस्याओं का ही अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य अनुवाद की सैद्धांतिक समस्याओं के बजाय व्यावहारिक समस्याओं के अध्ययन पर बल देने की आवश्यकता प्रतिपादित करता है।
- यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया में शब्दों के प्रयोज्य अर्थ का निर्धारण कथानक-प्रसंगों, स्थितियों, चरित्रों, मनोवैज्ञानिक दशाओं, सांस्कृतिक पक्षों और कृति के समग्र प्रभाव को ध्यान में रख कर किया जाता है। इस कारण एक ही कृति में, एक ही शब्द के, एक से अधिक अर्थ प्रयोग किए जा सकते हैं।
- शोध-कार्य से यह तथ्य प्राप्त होता है कि अनुवादक के समक्ष शब्द और वाक्य के साथ ही पैराग्राफ के अनुवाद की समस्या भी आती है। इसका संबंध विशेष ज्ञानानुशासन से है। किसी विशेष ज्ञानानुशासन के संबंधित प्रसंग जब किसी पूरे पैराग्राफ में आता है, तो उसके अभिप्राय को ग्रहण करने के लिए अनुवादक

को साहित्येतर समझ की आवश्यकता पड़ती है। प्रस्तुत शोध-कार्य के आधार-पाठ में न्याय और अपराध शास्त्र संबंधी घटनाओं में शोधार्थी ने इस प्रकार की समस्याओं का सामना किया है और उनके समाधान खोजे हैं।

- अनूदित पाठ की भाषा के गठन और स्वरूप के अनेक पक्ष होते हैं। अनुवादक के समक्ष कई बार ऐसी स्थिति आती है कि उसे लक्ष्य-भाषा में ऐसा शब्द उपलब्ध रहता है, जो अर्थ की दृष्टि से स्रोत-भाषा के शब्द के समतुल्य होता है, लेकिन उसे ग्रहण किया जाना अनुवाद को कृत्रिम बना सकता है। ऐसे में मात्र उपलब्धता के आधार पर शब्द का प्रयोग अनुवाद की भाषा को प्रभावहीन बना सकता है, अत: अनुवादक पाठकीय ग्रहणशीलता, भाषिक स्वाभाविकता और व्यावहारिकता के आधार पर स्रोत-भाषा के शब्द को ही लक्ष्य-भाषा में भी प्रयोग करने की स्वतंत्रता का उपयोग कर सकता है।
- उपन्यास का अनुवाद करने वाले अनुवादकों के लिए शब्द, वाक्य, वाक्यांश, पैराग्राफ, मुहावरों, कहावतों आदि के स्तर पर आने वाली समस्याओं के समाधान खोजना भी इस शोध-कार्य की उपलब्धि है।

संभावनाएँ

- यह शोध कार्य उन भावी शोधार्थियों के लिए विशेष उपयोगी होगा, जो स्वयं अनुवाद कर अनुवाद की समस्याओं के अध्ययन में रुचि रखने हैं।
- इस शोध-कार्य से प्रेरित होकर अनुवाद की व्यावहारिक चुनौतियों पर किए जाने वाले शोध की दिशा में बढ़ा जा सकता है।
- उपन्यास के अनुवाद और उसके लिए ग्रहीत लक्ष्य-भाषा स्वरूप का निर्धारण करने संबंधी शोध-कार्य किया जा सकता है।
- स्वयं आधार पाठ निर्माण और अनुवाद-अध्ययन केंद्रित शोध का विकास किया जा सकता है।